शोध मंथन Vol. XV No.I Jan.-Mar.2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

आधुनिक भारतीय चित्रकला में एम० एफ० हुसैन का योगदान

प्राप्तिः 23.02.2024
स्वीकृतः 25.03.2024

20

डॉ० ओम प्रकाश मिश्रा
प्राचार्य
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एण्ड टैक्नोलोजी
देहरादून (उत्तराखण्ड)
ईमेलः *mishraop200@gmail.com*

स्वाति पँवार
शोधार्थी
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड
टेक्नोलॉज, देहरादून (उत्तराखण्ड)

सारांश

कला शब्द की अपने आप में ही एक गहराई है।कला एक ऐसा निर्माण है जिसमें शारीरिक मानसिक और कौशलों का प्रयोग होता है। कलाओं में जिसे सबसे ऊपर माना जाता है वह चित्रकला है। चित्रकला समय के साथ–साथ नया रूप लेती गई। नए तरीकों, नए विचारोंव नहीं सामग्रियों के साथ–साथ कल का भी रूप बदलता गया और आधुनिक कलाका निर्माण हुआ। आधुनिक कला में कल्पना पर अधिक जोर दिया गया है। आधुनिक कला आधुनिकता से संबंधित है जिसमें मनुष्य अपने उन भावनाओं को दिखाता है जो उसने कभी महसूस की होया फिर कभी देखी हो। प्रोग्रेसिव आर्ट आंदोलन भारत का सबसे बड़ा कला आंदोलन है। मुंबई के कलाकारों में आंदोलन की बेचौनी की लहर उठने लगी और इस वजह से प्रोग्रेसिव आर्ट ग्रुप की स्थापना हुई इसमें एक मशहूर चित्रकार मकबूल फिदाहुसैन भी शामिल थे। एम० एफ० हुसैन एक भारतीय चित्रकार थे। जिन्होंने अपनी कला के जरिए आधुनिक कला को एक नया हीरूप दिया। और पूरे विश्व में अपनी कला के लिए मशहूर हो गए।

मुख्य बिनदु

आंदोलन, मशहूर, आधुनिकता, सामग्रियों।

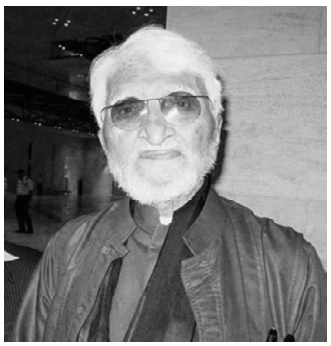

मशहूर चित्रकार एम एफ हुसैन ने अपने हुनर और नई सोच से आधुनिक काल को एकनया मोड़ दिया। आधुनिक सोच के कारण ही आधुनिक काल का निर्माण हुआ है एम० एफ० हुसैन एक भारतीय चित्रकार हैं यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 20वीं सदी के सबसे ज्यादा मशहूर भारतीय चित्रकार है। जिनके लिए उन्हे सम्मानित भी किया गया है। मशहूर चित्रकार एम० एफ० हुसैन ने अपने हुनर और नई सोच से आधुनिक काल को एकनया मोड़ दिया। आधुनिक सोच के कारण ही आधुनिक काल

का निर्माण हुआ है। एम एफ हुसैन एक भारतीय चित्रकार हैं यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 20वीं सदी के सबसे ज्यादा मशहूर भारतीय चित्रकार है। जिनके लिए उन्हे सम्मानित भी किया गया है।

एम एफ हुसैन एक प्रसिद्ध चित्रकार होने के साथ–साथ एक फिल्म निर्देशक, राजनीतिज्ञ, फिल्म निर्माता, फोटोग्राफर और पटकथा लेखक भी थे। यह है इस्लाम धर्म के थे। इनकी कला की प्रदर्शनियां यूरोप और अमेरिका में भी हुई है।

मकबूल फिदा हुसैन का जन्म महाराष्ट्र में सोलापुर के निकट गांव में हुआ था। इनके पिता इंदौर के एक मील में नौकरी करते थे अतः हुसैन अपने जन्म के कुछ महीनों बाद ही अपने परिवार के साथ इंदौर चले गए पूर्णग्राम इनकी मां मुस्लिम परिवार की थी और इन्हें इस प्रकार की धार्मिक शिक्षा देना चाहती थी इन्हें 6 वर्ष की आयु में धार्मिक पुस्तक पढ़ाना आरंभ किया गया। पर उनकी रुचि चित्र बनाने में थी। किसी भी व्यक्ति की मुख की आकृति बनाकर यह उसे पूरे कागज पर से काटकर अलग कर देते थे और अपने पास रख लेते थे।

हुसैन को बचपन से ही फिल्म देखने का बहुत शौक था। लेकिन उन्हें चित्रकला से ज्यादा कुछ और पसंद नहीं था। 1947 में वे प्रोगेसिव आर्ट ग्रुप में शामिल हुए। हुसैन जी ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना ली थी। 1966 में भारत सरकार ने इन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया। 1973 में इन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। 1991 में इन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। हुसैन कई साल लंदन में भी रहे। वहां रह कर उन्होंने अपने चित्रकला को एक अलग हीपहचान दी। 92 वर्ष की उम्र में केरल सरकार ने इन्हें राजा रवि वर्मा पुरस्कार से सम्मानित किया।

इनके द्वारा बनाई गई देवी देवताओं की पेंटिंग पर भी बहुत विवाद हुए। उन विवादों में सबसे ऊपर उनके द्वारा बनाई गई सरस्वती पेंटिंग थी। लोग दावा करते थे कि इन्होंने हमेशा हिंदू देवी देवताओं को ही निशाना बनाया है जबकि इन्होंने मुस्लिम लोगों पर किसी प्रकार की कोई चित्रकारी नहीं की। मां सरस्वती की नग्न आकृति को देखकर लोगों ने बहुत विरोध किया। और सभी इसे बहुत नाराज हुए। एक और पेंटिंग का नाम भारत माता है जिस पर भी इन्होंने इसी तरह का काम किया। अपने द्वारा बनाई गई ऐसी पेंटिंग के कारण यह हमेशा विवादों में ही घिरे रहे। यहां तककि इन्हें मौत की धमकी अभी मिलने लगी जिस कारण उन्होंने अपनी मर्जी से देश छोड़ने का फैसला लिया।

वर्ष 2006 में हुसैन हिंदुस्तान छोड़कर दूसरे देश चले गए। यह जहां रहने लगे उसे देश का नाम लंदन था। अपने जीवन का अंतिम समय उन्होंने कतर और लंदन में रहकर गुजारा।

मध्यम परिवार के रहने वाले एम एफ हुसैन ने आखिरी वक्त तक खुद को सीखते रहने वाला कलाकार रहने दिया। भले ही उन्हें पिकासो ऑफ इंडिया कहा जाता हो लेकिन उन्होंने खुद को कभी

स्कूल में पढ़ने सीखने वाले बच्चे से आगे नहीं बढ़ने दिया। मॉडर्न पेंटिंग के सबसे बड़े नाम पिकासो के साथ सम्मानित किए जा चुके हुसैन ने यूरोप और अमेरिका में न सिर्फ नाम बल्कि बहुत पैसा भी कमाया। 40 की उम्र में व भारत के सबसे प्रसिद्ध कलाकारों में गिने जाने लगे और सरकार ने उन्हें पद्मश्री भी दे दिया।

बाद मेंउन्हें बहुत से मान सम्मान मिले और कई विवाद भी उनके साथ जुड़े। कैनवस ने हुसैन को नहीं पहचान जरूर दी है लेकिन उनकी जिंदगी फिल्मों के साथ शुरू हुई थी उनके मन में फिल्मों को लेकर अलग जगह बनी रहे।

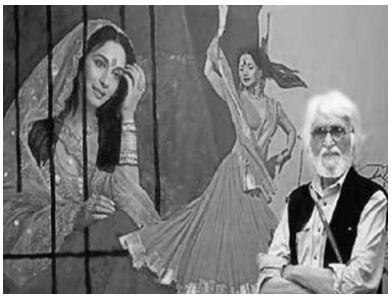

माधुरी दीक्षित की खूबसूरती को कई कलाकारों ने अपने कैनवस पर बेहतरीन रूप में उतारा। एम एफ हुसैन की माधुरी दीक्षित पेंटिंग उनमें से एक बहुत ही प्रसिद्ध पेंटिंग है। हुसैन माधुरी दीक्षित की आई फिल्म हम आपके हैं कौन के इतने बड़े फैन थे कि उन्होंने वह फिल्म 67 बार देखी।

इनके कुछ प्रसिद्ध चित्र इस प्रकार हैं – जमीन, लैंप और मकड़ी, भारतमाता, आपात काल, हनुमान, जापान में प्रेमी, नीली रात, दुपट्टे में तीन औरतें, अंतिम भोज, मुर्गा, महात्मा गाँधी, बनारस, पोट्रेट ऑफ अंब्रेला, कर्बला, इमेज ऑफ ब्रिटिश राज, मुक्तिबोध की कविताओं पर आधारित चित्र।

इनके अंतिम दिनों की भी कुछ प्रसिद्ध चित्र है – मदर टेरेसा, तांडव करता हुआ रावण, अकेली सीता, श्वेत कैनवास पर बिखरे अक्षर, हिंसा का प्रतीक अमिताभ बच्चन, माधुरी दीक्षित, गणेश, दिशाहीन उड़ते शान्ति का प्रतीक कपोत, फूलन देवी।

हुसैन ने कतर और लंदन में अपने अंतिम दिन बिताने के बाद, भारत लौटने की तीव्र इच्छा व्यक्त की थी। पर उनको इस बात की सलाह दी गई, कि वह भारत ना आए क्योंकि हुसैन को लगातार जान से मारने की धमकियां मिल रही थी। कुछ महीनों तक बीमार रहने के बाद हुसैन लंदन के रॉयल ब्राम्पटन अस्पताल में 9 जून 2011 को हृदय की गति रुकने के बाद अंतिम सांस ली थी।

हुसैन का अंतिम संस्कार अमेरिका के सबसे बड़े कब्रिस्तान ब्रुकवुड कब्रिस्तान में किया गया था। जिस तरह से चित्रकला समय के साथ–साथ बदलती गई उससे चीजों को देखने का नजरिया भी बदलता गया। कलाकार कठिन परिश्रम व अपनी कड़ी मेहनत के जरिए ऊंचाइयों तक पहुंचा है इतिहास में उनका नाम हमेशा अमर रहेगा। आधुनिक कला को बढ़ावा देने में बहुत से महान

चित्रकारों का हाथ है। उन्होंने समाज के खिलाफ जाकर लोगों की सोच को बदला और लोगों के नजरिए को भी। आधुनिक कला और अमूर्त कला के जरिए चित्रकला को एक नया मोड़ मिला। इससे स्मरण शक्ति को भी बढ़ावा मिला है।

इस कला के जरिए वास्तविकता से हटकर भी चित्रों को बनाया जाता है। कला को नया मोड़ देने के लिए चित्रकारों ने प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट समूह का निर्माण किया चित्रकला को अलग नजरिए से देखा जाने लगा। आधुनिक कला को बढ़ावा देने में एम एफ हुसैन का बहुत बड़ा हाथ है।

हुसैन की पेंटिंग की खासियत थी कि वे सभी रंगों का प्रयोग करते थे। वे एक दो रंगो से काम नहीं लेते थे। वे लोक कला की परंपरा को आधुनिक कला में मिला देते थे। मुंबई में प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप कि वह एक महत्वपूर्ण कड़ी थे। वह दोहरी पीढ़ी से गुजरने वाले कलाकार थे।

संदर्भ

1. भारतीय चित्रकला का इतिहास ISBN 978–81–7137–951–4
2. आधुनिक भारतीय चित्रकला संजय पब्लिकेशन्स (शैक्षिक पुस्तक प्रकाशक)
3. https%//hi-m-wikipedia-or.